ताथें सुख और अंगोंके, सो भी लिए दिल चाहे।
ना तो श्रवन ताबे कई गंज हुए, ताको एक गुन दिल न समाए।। ४० ।।

इसलिए दूसरे अंगों के सुख भी मैंने अपने दिल की चाहना के अनुसार लिए, वरना कानों में ही गंजान गंज गुण और सुख भरे थे, जिसके एक गुण का सुख भी दिल में नहीं समाता।

ए सुख बिना हिसाब के, ए जानें मोमिन दिल अर्स।
ए रस जिन रूहों पिया, सोई जानें दिल अरस-परस।। ४१ ।।

जिन मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज अर्श करके बैठे हैं, वही इन बेशुमार सुखों को जानते हैं। इस रस को जिन्होंने पीया है, वही श्री राजजी महाराज के तथा अपने दिल के अरस-परस सुखों को जानती हैं।

जो देखी सारी कुदरत, सो भी इन श्रवनकी बरकत।
जो विचार करों इन तरफको, तो देखों सबमें एही सिफत।। ४२ ।।

इन कानों की कृपा से ही कुदरत का सारा माया का खेल देखा जब परमधाम की तरफ विचार करती हूं तो वहां के अंगों में यही सिफत दिखाई देती है।

जो सहूर कीजे हक सिफतें, तो ए तो हक बका श्रवन।
ए सुख क्यों आवें सुमार में, कछू लिया अर्स दिल मोमिन।। ४३ ।।

जो श्री राजजी महाराज की कृपा से विचार करके देखें तो यह श्री राजजी महाराज के अखण्ड श्रवण के सुख हैं। इन बेशुमार सुखों में से कुछ हिस्सा मोमिनों ने अपने अर्श दिल में लिया है।

जेता सहूर जो कीजिए, सब सिफतें सिफत बढ़त।
जो कदी आई बोए इस्क, तो मुख ना हरफ कढ़त।। ४४ ।।

जितना विचार करके देखें, सिफतें बढ़ती ही जाती हैं। यदि इश्क की खुशबू मिल गई तो फिर जबान से एक हरफ भी नहीं निकलता।

कहे हुकमें महामत मोमिनों, क्यों कहे जाए गुन कानन।
जाके ताबे कई गंज सागर, ए सुख सेहे सकें अर्सके तन।। ४५ ।।

श्री महामतिजी श्री राजजी महाराज के हुकम से मोमिनों से कहती हैं कि श्री राजजी महाराज के कानों के गुणों को कैसे कहें? क्योंकि इन कानों के अधीन कई गंजान गंज सुखों के सागर भरे पड़े हैं, जिनको परमधाम के तन ही सहन कर सकते हैं।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ७५३ ॥

हक मासूक के नेत्र अंग

देखों नैना नूरजमाल, जो रूहों पर सनकूल।
अरवा होए जो अर्स की, सो जिन जाओ खिन भूल।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे अर्श की रूहों! नूरजमाल श्री राजजी महाराज जो अपनी रूहों पर फिदा हैं, उनके नैनों को देखो। तुम इनको एक क्षण के लिए भी मत भूलो।

Nijanand App

दिल अर्स नाम धराए के, नैना बरनों नूरजमाल।
हाए हाए छेद न पड़े छाती मिने, रोम रोम लगे ना रूह भाल।। २ ।।

अपने दिल में श्री राजजी महाराज को बैठाकर उनके नैनों का वर्णन करती हूं। इस शोभा को वर्णन करते समय मेरी छाती में तथा रोम-रोम में भाले के समान चुभ कर टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाते।

जो अरवा कहावे अर्सकी, सुने बेसक हक बयान।
हाए हाए ए झूठी देहको छोड़के, पोहोंचत ना तित प्रान।। ३ ।।

जो अर्श की रूहें कहलाती हैं, वह श्री राजजी महाराज के अंगों का वर्णन सुनकर झूठी देह को छोड़कर श्री राजजी के चरणों में क्यों नहीं पहुंच जाती?

सिफत पाई हक नैन की, हक नैनों में गुन अपार।
सो गुन अखंड अर्स के, ए रंग हमेसा करार।। ४ ।।

मैंने श्री राजजी महाराज के नैनों की महिमा को देखा, उन नैनों में अपार गुण भरे हैं। गुण भी अखण्ड परमधाम के हैं जो हमेशा सुख देते हैं।

गुन नैनों के क्यों कहूं, रस भरे रंगीले।
मीठे लगें मरोरते, अति सुन्दर अलबेले।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज के नैनों के गुण को कैसे बयान करूं? वह अत्यन्त रस भरे, रंगीले, सुन्दर तथा अलबेले हैं। जब तिरछी नजर से देखते हैं तो अति मीठे लगते हैं।

सोभावंत कई सुख लिए, तेजवंत तारे।
बंके नैन मरोरत मासूक, सब अंग भेदत अनियारे।। ६ ।।

नैनों के तारे अति तेज युक्त, सुखकारी, शोभा युक्त हैं। जब श्री राजजी महाराज तिरछी नजर से रूहों की तरफ देख लेते हैं तो रूहों के अंगों को तड़पा देते हैं।

मेहेर भरे मासूक के, सोहें नैन सुन्दर।
भृकुटी स्याम सोभा लिए, चुभ रेहेत रूह अंदर।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज के नेत्र मेहर से भरपूर अति सुन्दर हैं। उनकी भौंहें काली तथा अति सुन्दर हैं जो रूहों के दिल में चुभ रही हैं।

जोत धरत कई जुगतें, निहायत मान भरे।
लज्या लिए पल पांपण, आनंद सुख अगरे।। ८ ।।

नैनों में कई तरह की तरंगें उठती हैं, जो स्वाभिमान से भरपूर होती हैं। नैन अति शर्मीले हैं। उन पर सुन्दर पलकें हैं जो अति सुखदायी हैं।

नैनों की गति क्यों कहूं, गुनवंते गंभीर।
चंचल चपल ऐसे लगें, सालत सकल सरीर।। ९ ।।

श्री राजजी महाराज के नैन जब चलते हैं तो गुणों से भरे अति गम्भीर दिखाई देते हैं। उनके अन्दर की चंचलता और चपलता रूहों के सारे शरीर को तड़पा देती है।

Nijanand App

नूर भरे नैना निरमल, प्रेम भरे प्यारे।
रस उपजावत रंगसों, मानों अति कामन–गारे।। १० ।।

श्री राजजी महाराज के नूरी नैन अति निर्मल हैं जो प्रेम से भरे अति प्यारे हैं। वह तरह-तरह से आनन्द देते हैं। लगता है बहुत ही मनमोहक हैं तथा इश्क को जागृत कर देते हैं।

जब खैंचत भर कसीस, तब मुतलक डारत मार।
इन विध भेदत सब अंगों, मूल तन मिटत विकार।। ११ ।।

जब श्री राजजी महाराज कशिश (आकर्षण) वाली दृष्टि से देखते हैं, तो रूहें बिल्कुल तड़प उठती हैं। इस तरह उनके अंग-अंग के विकार मिट जाते हैं।

निपट बंकी छबि नैन की, नूरै के तारे कारे।
सोभें सेत लालक लिए, नूर जोत उजियारे।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज के नैनों की छबि बड़ी बांकी है। अन्दर की काली पुतली का नूर बड़ा सुन्दर है। इन आंखों की सफेदी की लालिमा अति सुन्दर है। आंखों के नूर से सब जगह उजाला ही उजाला दिखता है।

बड़े लम्बे टेढ़क लिए, अति अनियां सोभे ऊपर।
सीतल करुना अमी झरे, मद रंग भरे सुन्दर।। १३ ।।

नैन लम्बे और तिरछाई की बनावट में हैं, जिनकी नोकें बड़ी सुन्दर शोभा देती हैं। नैनों में शीतलता, दयालुता का अमृत झरता है। मस्ती से भरे सुन्दर दिखाई देते हैं।

सोहत छैल छबीले, कहा कहूं सलूक।
एह नैन निरखे पीछे, हाए हाए जीव न होत भूक भूक।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज नैनों से छैल-छबीले लगते हैं, उनकी शोभा का क्या वर्णन करूं? इन नैनों को देखने के बाद हाय! हाय! यह जीव टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

दयासिंध सुख सागर, इस्क गंज अपार।
सराब पिलावत नैन सों, साकी ए सिरदार।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज दया और सुखों के तो सागर ही हैं जो इश्क से भरपूर हैं। नैनों से श्री राजजी महाराज अपनी रूहों को इश्क की शराब मस्त नजर से पिलाते हैं।

छब फब इन नैनों की, जो रूह देखे खोल नैन।
आठों पोहोर न निकसे, पावे आसिक अंग सुख चैन।। १६ ।।

यदि अर्श की रूह इन नैनों को अन्दर की नजर खोलकर देखे तो इनकी छवि रात-दिन उसके दिल से नहीं निकलेगी। आशिक रूहों को सुख और चैन इन्हीं नैनों से मिलता है।

प्रेम पुंज गंज गंभीर, नेत्र सदा सुखदाए।
जो रूह मिलावे नैन नैनसों, तो चोट फूट निकसे अंग ताए।। १७ ।।

नैन प्रेम से भरपूर गंभीरता लिए हुए सदा सुख के दाता हैं, जब रूह के नैन श्री राजजी के नैनों से मिल जाते हैं तो नजर की चोट रूह के अंग में लग जाती है।

Nijanand App

सीतल दृष्ट मासूक की, जासों होइए सनकूल।
होए आसिक इन सरूप की, पाव पल न सके भूल।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज की शीतल दृष्टि से रूहों को बहुत आनन्द मिलता है। जो रूह इस स्वरूप की आशिक हो वह कभी चौथाई पल के लिए भी श्री राजजी को भूल नहीं सकती।

नैन देखें नैन रूहके, तिनसों लेवे रंग रस।
तब आवें दिलमें मासूक, सो दिल मोमिन अरस-परस।। १९ ।।

रूह के नैन जब श्री राजजी महाराज के नैनों को देखते हैं तो उससे बहुत आनन्द मिलता है तब रूहों के माशूक श्री राजजी महाराज रूहों के दिल में समा जाते हैं। इस तरह से श्री राजजी के दिल में आने से रूह और श्री राजजी महाराज एक दिल में अरस-परस (परस्पर) एकाकार हो जाते हैं।

रूह देखे हक नैन को, नेत्र में गुन अनेक।
सो गुन गिनती में न आवहीं, और केहेने को नैन एक।। २० ।।

रूहें जब श्री राजजी महाराज के नैनों को देखती हैं तो नैनों में अनेक गुण दिखाई देते हैं। वह गुण गिने नहीं जाते। बेशुमार हैं। नैन कहने को तो एक ही हैं।

कई गुन देखे छब फबमें, कई गुन मांहें सलूक।
गुन गिनते इन नैनोके, हाए हाए अजूं न होए दिल भूक।। २१ ।।

नैनों के कारण श्री राजजी महाराज की छवि में कई गुण दिखाई देते हैं और इस तरह से कई गुण नैनों की सलूकी में हैं। नैनों के गुण गिनने में यह दिल टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

मेरी रूह नैनकी पुतली, तिन नैन पुतली के नैन।
मासूक राखूं तिन बीचमें, तो पाऊं अर्स सुख चैन।। २२ ।।

मेरी रूह श्री राजजी महाराज रूपी आंख की पुतली है। इस पुतली के नैन श्री राजजी हैं इनको पुतलियों के अन्दर जहां नूर होता है वहां छुपाकर रखूं तो परमधाम के सब सुख मिल जाएंगे।

प्रेम प्रीत रस इस्क, सब नैनों में देखाई देत।
ए रस जानें रूहें अर्सकी, जो भर भर प्याले लेत।। २३ ।।

प्रेम, प्रीति, रस, इश्क सब नैनों में दिखाई देते हैं। इस रस को अर्श की रूहें ही जानती हैं, जो श्री राजजी महाराज के इश्क के प्याले भर-भरकर लेती हैं।

देख देख जो देखिए, तो अधिक अधिक अधिक।
नैन देखे सुख पाइए, जानों सब अंगों इस्क।। २४ ।।

देख-देखकर फिर देखें तो शोभा अधिक से अधिक दिखाई देती है। फिर नैनों को देखने से और सुख मिलता है, लगता है कि श्री राजजी महाराज के सब अंगों में इश्क ही इश्क है।

ए नैन देख मासूक के, आसिक के सब अंग।
सुख सीतल यों चुभत, सब अंग बढ़त रस रंग।। २५ ।।

माशूक श्री राजजी महाराज के नैनों को देखकर आशिक रूहों के सभी अंगों में सुख और शीतलता चुभ जाती है और सब अंगों में आनन्द भर जाता है।

Nijanand App

कई गुन बड़े नैनके, और कई गुन नैन टेढ़ाए।
कई गुन तेज तारन में, कई गुन हैं चंचलाए।। २६ ।।

नैनों के बड़े होने में कई गुण हैं और तिरछे होने में कई गुण हैं। इस तरह से कई गुण नैनों की पुतलियों में हैं और कई गुण चंचलता में हैं।

कई गुन हैं तिरछाई में, कई गुन पांपण पल।
कई गुन सीतल कई मेहेरमें, कई तीखे गुन नेहेचल।। २७ ।।

नैनों की तिरछाई में कई गुण हैं और पलकों के झपकने में कई गुण हैं। नैनों में शीतलता और मेहर के कई गुण हैं। कई अखण्ड गुण उनकी तिरछी चितवन में हैं।

कई गुन सोभा सुन्दर, कई गुन प्रेम इस्क।
कई गुन नैन रंग में, कई गुन नैन रस हक।। २८ ।।

नैनों की शोभा, सुन्दरता, प्रेम और इश्क तथा कई तरह के गुण हैं। उस तरह से नैनों के रंग में कई गुण हैं और रस में कई तरह के गुण हैं।

कई गुन नैनों के नूरमें, कई गुन नैनों के हेत।
कई गुन तीखे कई सीलमें, गुन मीठे कई सुख देत।। २९ ।।

कई गुण नैनों के नूर में हैं, कई गुण नैनों के प्यार में हैं। कई गुण तिरछेपन में हैं, कई गुण शीतलता में हैं। इस तरह से कई मीठे-मीठे गुणों से श्री राजजी महाराज रूहों को सुख देते हैं।

कई गुन केते कहूं, गुन को न आवे पार।
ए भूल देखो अपनी, ए सोभा गुन गिनूं माहें सुमार।। ३० ।।

नैनों के गुण कहां तक कहूं? गुण बेशुमार हैं। यह अपनी भूल है जो इस शोभा के गुणों को गिन रहे हैं।

कई गुन नेत्र सुभान के, सो क्यों कहूं चतुराई इन।
इत जुबां बल न पोहोंचहीं, हिस्सा कोटमा एक गुन।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज के नैनों में कई गुण हैं। उनकी चतुराई कैसे कहूं? गुणों के करोड़वें हिस्से का वर्णन करने के लिए भी यहां की जबान में ताकत नहीं है।

प्यारे मेरे प्राण के, नैना सुख सागर सलोने।
रेहे ना सकों बिना रंगीले, जो कसूंबड़ी उजलक में।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज के नैन मुझे प्राणों से भी प्यारे हैं, जो सुख के सागर और सलोने हैं। ऐसे नैनों के बिना मैं नहीं रह सकती। नैनों की उज्ज्वलता में लालिमा की भी बड़ी शोभा है।

जब देखों सीतल नजरों, सब ठरत आसिक के अंग।
सब सुख उपजे अर्स में, हक मासूक के संग।। ३३ ।।

जब मैं अपनी शीतल नजर से श्री राजजी महाराज को देखती हूं तो मेरे एक-एक अंग को शान्ति प्राप्त होती है। फिर माशूक श्री राजजी महाराज के साथ परमधाम के सभी सुख मिलते हैं।

Nijanand App

मैं नैनों देखूं नैन हक के, हुई चारों पुतली तेज पुन्ज।
जब नैन मिलें नैन नैन में, नूरै नूर हुआ एक गन्ज।। ३४ ।।

जब मैं अपने दोनों नैनों से श्री राजजी महाराज के दोनों नैनों को देखती हूं तो हम दोनों की चार पुतलियों का तेज और बढ़ जाता है। जब श्री राजजी महाराज के नैनों से मेरे नैन मिलते हैं तो एक गंजान गंज (ढेर) नूर ही नूर दिखाई देता है।

हक देखें पुतली अपनी, मैं देखूं अपनी पुतलियां।
मैं हक देखूं हक देखें मुझे, यों दोऊ अरस-परस भैयां।। ३५ ।।

श्री राजजी महाराज अपनी पुतली से मुझे देखते हैं। मैं अपनी पुतलियों से श्री राजजी को देखती हूं। इस तरह से हम अरस-परस (परस्पर) देखकर एकाकार हो जाते हैं।

हक देखें मेरे नैन में, पुतली जो अपनी।
मैं अपनी देखूं हक नैन में, यों दोऊ जुगलें जुगल बनी।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज मेरे नैनों में अपने स्वरूप को देखते हैं और मैं अपने स्वरूप को श्री राजजी के नैनों में देखती हूं। इस तरह से दोनों मिलकर मेरे दो स्वरूप श्री राजजी की दो आंखों में और श्री राजजी के दो स्वरूप मेरी दो आंखों में बने हैं।

अति गौर पांपण नैन की, पल वालत देखत सरम।
गुन गरभित मेहेरें पाइए, रूह हुकमें देखे ए मरम।। ३७ ।।

नैनों की पलकें बड़ी गोरी हैं। उनके झपकने में लाज और शर्म दिखाई देती है। श्री राजजी महाराज की मेहर से सागर के समान गहरे गुणों के सुख मिलते हैं। यह सब भेद श्री राजजी महाराज के हुकम से ही समझ में आते हैं।

स्याम बंके भौंह नैनों पर, रंग गौर जुड़े दोऊ आए।
निपट तीखी अनियां नेत्र की, मारे आसिकों बान फिराए।। ३८ ।।

काले रंग की भौंहें गोरे रंग के नैनों पर आकर मिलती हैं। इनकी नोंकें बड़ी तीखी हैं, जिससे श्री राजजी महाराज अपने आशिक रूहों को नजर के बाण घुमाकर मारते हैं।

जब खैंचत नैना जोड़ के, तब दोऊ बान छाती छेदत।
अंग आसिक के फूट के, वार पार निकसत।। ३९ ।।

जब दोनों नैनों से दो नैन-बाण खींचकर मारते हैं, तो दोनों बाण रूहों की छाती को छेद देते हैं, तड़पा देते हैं और यही नैन बाण आशिक रूहों को घायल कर देते हैं।

दमानक ज्यों कहूं कहूं, यों पीछली देत गिराए।
ए चोट आसिक जानहीं, जो होए अर्स अरवाए।। ४० ।।

जैसे बन्दूक चलने पर पीछे धक्का मारकर गिरा देती है, इसी तरह से इन नैनों के बाण की चोट को अर्श की रूहें जानती हैं।

भौंह बंके नैन कमान ज्यों, भाल बंकी सामी तीन बल।
बान टेढ़े मारत खैंच मरोर के, छाती छेद न गया निकल।। ४१ ।।

भौंहे कमान की तरह टेढ़ी हैं। माथे में तीन तरह की टेढ़ाई सुन्दर दिखाई देती है। ऊपर से श्री राजजी महाराज नैन बाण खींचकर मारते हैं, तो रूहें एकदम तड़प उठती हैं।

Nijanand App

तीर कह्या तीन अंकुड़ा, छाती छेद न गया चल।
रह्या सीने बीच आसिक के, हुआ काढ़ना रूहों मुस्किल।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज का नैन बाण तीन कोने वाला रूहों को छेद देता है। वह आशिक रूहों की छाती में अटका रह जाता है, जिसे रूहों को छाती से निकालना बड़ा कठिन होता है।

केहेर कह्या तीर त्रगुड़ा, रही सीने बीच भाल।
रोई रात दिन आसिक, रोवते ही बदल्या हाल।। ४३ ।।

श्री राजजी की मेहर का नैन बाण आशिक के सीने में भाले के समान चुभकर कहर ढा गया। उस दर्द में रात-दिन रोते-रोते आशिक रूहों की हालत ही बदल गई, तो कहर से मेहर हो गई।

अर्स बका तीर त्रगुड़ा, रह्या अर्स रूहों हिरदे साल।
ना पांच तत्व तीर त्रिगुन, ए नैन बान नूरजमाल।। ४४ ।।

यह श्री राजजी का नैन बाण अखण्ड परमधाम का तीन कोना तीर रूहों के हृदय में दुःख देता है। यह तीर न पांच तत्व का है, न तीन गुण का। यह नैन बाण नूरजमाल श्री राजजी महाराज के हैं।

ए बलवान सेहेज के, जो कदी मारें दिलमें ले।
न जानों तिन आसिक का, कौन हाल होवे ए।। ४५ ।।

यह उस बलवान श्री राजजी महाराज के सरल स्वभाव के नैन बाण की हकीकत है। यदि दिल में इश्क को लेकर नैन बाण चला दें तो न जाने आशिक रूहों का क्या हाल हो जाए?

ए बान टेढ़े अव्वल के, और टेढ़े लिए चढ़ाए।
खैंच टेढ़े मारें मरोर के, सो क्यों न आसिक टेढ़ाए।। ४६ ।।

यह श्री राजजी महाराज के तिरछे नैन बाण शुरू से ही हैं। जब तिरछे चितवन से नैन बाण मार देते हैं तो आशिक रूह की हालत खराब हो जाती है, बिगड़ जाती है, टेढ़ी हो जाती है।

कहे गुन महामत मोमिनों, नैना रस भरे मासूक के।
अपार गुन गिनती मिने, क्यों कर आवें ए।। ४७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने श्री राजजी महाराज के रस भरे नैनों का वर्णन किया है। नैनों के अन्दर बेशुमार गुण भरे हैं। उनकी गिनती कैसे करूं?

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ८०० ।।

हक मेहेबूब की नासिका

गौर निरमल नासिका, सोभा न आवे माहें सुमार।
आसिक जाने मासूक की, जो खुले होंए पट द्वार।। १ ।।

श्री राजजी महाराज की गोरी और निर्मल नासिका की शोभा कहने में नहीं आती। आशिक रूहें ही श्री राजजी महाराज की नासिका के सुख जानती हैं। यदि उन्हें जागृत बुद्धि से श्री राजजी महाराज की पहचान हो गई हो।

Nijanand App